अथवा

(ब) अपरिणामोपशमो दारुणोलक्ष्मीमदः। कण्टमनञ्जनवर्तिसाध्यम परम् ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्। अशिशिरोपचारहार्योऽतितीव्रो दर्पदाहज्वरोष्मा। सततममूलमन्त्रगम्यो विषमो विषयविषास्वादमोहः। नित्यमस्नानशौचबाध्यो रागमलावलेपः। अजस्त्रमक्षपावसानप्रबोधा घोरा च राज्यसुखसन्निपातनिद्रा भवतीति विस्तरेणाभिधीयसे। गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवन-त्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वचेति महतीयं खल्वनर्थ-परम्परा। सर्वविनयानामेकैकम्प्येषामायतनम् किमुत समवायः।

4. 'शिवराजविजयम्' की ऐतिहासिकता का विश्लेषण कीजिए।
5. समास की परिभाषा लिखिए। समास के प्रकारों की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।
6. शुकनासोपदेश की वर्तमान प्रासङ्गिकता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या कीजिए :
   (अ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
   (ब) अल्पाच्तरम्
8. निम्नलिखित समस्त पद की सूत्र निर्देशपूर्वक रूपसिद्धि कीजिये :
   (अ) भूतपूर्वः
   (ब) हरित्रातः
9. मंत्री शुकनास प्रदत्त उपदेशों को सार रूप में लिखिए।

237

SA–04

June/December – Examination 2020

B.A. (Part II) Examination

SANSKRIT

(Gadhya Samas Prakaran Tatha Nibandh)

गद्य समास प्रकरण तथा निबन्ध

Paper : SA-04

*Time : **2** Hours*] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **7×2=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. (i) महाकवि बाणभट्ट किस सम्राट् के सभापण्डित थे ?
   (ii) 'शिवराजविजयम्' का कथानक कितने विरामों में विभक्त एवं प्रत्येक विराम कितने निःश्वासों में निबद्ध है ?
   (iii) 'शुकनासोपदेश' के अनुसार गुरुपदेश को किस प्रकार का स्नान कहा गया है ?

(iv) 'यूपदारु' का समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

(v) शिवाजी ने क्या प्रतिज्ञा ली थी ?

(vi) शाइस्ता खाँ को दक्षिण का शासक बनाकर भेजे जाते समय शिवाजी कहाँ रह रहे थे ?

(vii) गद्य का प्रथम स्वरूप किस वेद को माना जाता है ?

खण्ड—ब 4×14=56

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंकों का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्य की व्याख्या सप्रसंग हिन्दी भाषा में कीजिए :

(अ) महात्मन्! क्वाधुना विक्रमराज्यम् ? वीर विक्रमस्य तु भारतभुवं विरहय्य गतस्य वर्षाणां सप्तदश-शतकानि व्यतीतानि। क्वाधुना मन्दिरे-मन्दिरे जय-जय ध्वनिः ? क्व सम्प्रति तीर्थे-तीर्थे घण्टानादः ? "क्वापि मठे-मठे वेदघोष ? अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विक्षप्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धूय धूमध्वजेषु ध्मायन्ते, पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भर्ज्यन्ते। क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचिद् तुलसीवनानि छिद्यन्ते, क्वचिद्दाराः अपह्रियन्ते, क्वचिद्धतानि लुठ्यन्ते, क्वचिदार्त्तनादाः, क्वचिद्रूधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद गृहनिपातः" इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च परितः।

अथवा

(ब) "मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकल-कला-कलाप-कलनः सकल-कालन करालः कालः। स एव कदाचित् वयः पूर पूरितान्यकूपार-तलानि मरूकरोति। सिंह-व्याघ्र-भल्लूक-गण्डक-फेरू-शश-सहस्र-व्याप्तान्यरण्यानि जनपदी करोति, मन्दिर-प्रासाद-हर्म्य-शृङ्गाटक-चत्वरोद्यान-तडाग-गोष्ठ-मयानि नगराणि च काननीकरोति। निरीक्ष्यतां कदाचिद् अस्मिन्नेव भारतवर्षे यायजूकै राजसूयादियज्ञा व्ययाजिषत, कदाचिदिहैव वर्ष-वाताऽऽतप-हिम-सहानि तपांसि अतापिषत। सम्प्रति तु म्लेच्छैर्गावो हन्यन्ते, वेदा विदीर्यन्ते, स्मृतयः सम्मृद्यन्ते, मन्दिराणि मन्दुरीक्रियन्ते, सत्य पात्यन्ते, सन्तश्च सन्ताप्यन्ते।

3. निम्न में से किसी गद्य की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिये :

(अ) दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविध संक्रान्तिः। पातालगुहेव तमोबहुला हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया। प्रावृडिवाचिर द्युतिकारिणी। दुष्ट पिशाचीव दर्शितानेक पुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्ती करोति। सरस्वती परिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति जनम्। गुणवन्तमपवित्तमिव न स्पृशति। उदारसत्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते। सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति। अभिजातमहिमिव लङ्घयति। शूरं कण्टकमिव परिहरति। दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति। मनस्विनमुन्मत्तमिवोहसति। परस्परविरुद्धञ्चेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजचरित्रम्।